MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Issue-56, Vol-02, Oct. To Dec. 2025

Vidyawarta®

Peer Reviewed Research Journal

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Oct. To Dec. 2025
Issue 56, Vol-02

Date of Publication
01 October 2025

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले
-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

13) नाटककारगो. ब. देवल: व्यक्ती आणि कार्य
डॉ. विठ्ठल शंकर केदारी, ||59

14) मराठी भाषा आणि अभिजाततेचा गौरव
डॉ.धनंजय शिवाजी त्रिमुखे, ||63

15) वाचन संस्कृतीमुळे विद्यार्थ्यांचा व्यक्तिमत्व विकास
श्री बाळासाहेब हरिश्चंद्र शेंदुरकर ||68

16) भारतीय कला में स्त्री की छवि: एक समीक्षात्मक अध्ययन
प्रोफेसर आयशा फातमी ||70

17) जन जागरण और सामाजिक क्रांति के अग्रदूत पण्डित सुंदर लाल शर्मा
डॉ. प्रशांत कुमार चौरे, ||78

18) मंडला कलाय आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र
डॉ. नेहा जैन ||80

19) संतालो की लोक कला एंव संस्कृति:समकालीन परिदृश्य
डॉ. पाल्टन मुर्मू ||88

20) 'मिथिलेश्वर की कहानियों में आर्थिक ग्राम्य जीवन'
नेहा देवी ||93

21) शहरी उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता एवं.....
डॉ. निरुपमा दुबे ||96

22) सप्तसिंधु क्षेत्र लद्दाख का भौगोलिक एवं सामाजिक परिदृश्य
नितिश कुमार—डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति ||100

23) प्राकृतिक आपदाएँ की मार और कृषि आपदाएँदिवाकर के उपन्यासों के परिपेक्ष्य में.....
प्रा. पाटील बाळासाहेब पंडितराव ||105

24) स्त्री—पुरुष संबंधों की पुनर्व्याख्या: गीतांजलि श्री के कथा—साहित्य के विशेष संन्दर्भ में
वर्षा यादव ||107

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

20

'मिथिलेश्वर की कहानियों में आर्थिक ग्राम्य जीवन'

नेहा देवी
सहायक आचार्य
हिन्दू कन्या महाविद्यालय,
सीतापुर, उत्तर प्रदेश

आज के उपभोक्तावादी युग में धन को अत्यधिक महत्व प्राप्त है। अपने जीवन को चलाने के लिए वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन में अर्थ की महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यक्ति और समाज का विकास अर्थ के बिना असंभव है। आर्थिक स्थिति के उतार चढ़ाव के कारण सामाजिक जीवन में परिवर्तन होता है। आर्थिक असमानता के कारण समाज में वर्ग भेद होता है। जीवन में अर्थ ही महत्वपूर्ण बनने से लोग उसकी प्राप्ति के लिए अनीति, बेईमानी, अनादर, अन्याय, अत्याचार बढ़ते हैं। परिणामत: सामाजिक स्तर बिगड़कर लोगों को अनेक कठिनाईयों और संकटों को झेलना पड़ता है।

अंग्रेजी शासनकाल में भी भारतीय ग्रामीणों की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। भारत में गरीबी, बेरोजगारी बढ़ती गई और सेठ साहूकार तथा पूँजीपतियों ने निम्न वर्ग का शोषण किया। आजादी के बाद हमारी अपनी सरकार आई। भारत कृषि प्रधान देश है और सत्तर प्रतिशत लोग गाँवों में रहते हैं। वे कृषि पर ही निर्भर है। अत: देश का विकास करना हो तो खेती में सुधार करना चाहिए। इसलिए सरकार ने गांव के विकास के लिए अनेक योजनाएं और प्रकल्प शुरू किए। इसके साथ ही सरकार ने गांव के विकास के लिए लोगों की गरीबी बेरोजगारी दूर करने के लिए छोटे–छोटे व्यवसाय शुरू किए। किन्तु सरकारी योजनाएं गांवों तक नहीं पहुँची। गरीब असहाय तथा बेरोजगारों को जो मद्द की जा रही थी वह उन तक नहीं पहुंची। इसका लाभ पूंजीपति, जमींदार, नेता और सरकारी अधिकारियों ने उठाया। भ्रष्ट उच्च सरकारी अधिकारियों ने सामान्य लोगों को मिलने वाली मद्द हड़प ली। इससे गरीबी और अभावों से पीड़ित सामान्य लोगों का शोषण होने लगा। स्वार्थ प्रवृत्ति के कारण मनुष्यों में नैतिक आचरण आदर्श वादिता आदि का पतन हुआ। लोगों में द्वेष, ईष्या, बेईमानी इतनी बढ़ गई लोग एक–दूसरे के दुश्मन बन गए। इन सब परिस्थितियों के लिए जिम्मेदार अर्थ ही है। अर्थ प्राप्ति के कारण ही लोगों में इतना परिवर्तन हुआ और भारत के ग्रामों की जिंदगी में आमूलचूल परिवर्तन हो गया।

कथाकार मिथिलेश्वर ने आजादी के पहले और आजादी के बाद ग्रामों और ग्रामीण लोगों की स्थिति को नजदीक से देखा और जिया है। उनके जीवन में आने वाले उतार चढ़ाव को देखा हैं विशेष रूप से आजादी के बाद सरकार अधिकारियों के भ्रष्टाचार उससे उत्पन्न स्थिति को भी नजदीक से देखा है इसलिए ग्रामीण जीवन के आर्थिक पक्ष के अंतर्गत शिक्षित ग्रामीण बेरोजगार युवक, गरीबी अभाव और सुविधाएँ, शिक्षा संस्थाओं के द्वारा शिक्षित एवं अविवाहित युवतियों का यौन शोषण, गरीबी और बेकारी आदि समस्याओं का मिथेश्वर ने अपनी कहानी साहित्य में चित्रण किया जिसे इस प्रकार देखा जा सकता है।

मिथलेश्वर ने अपनी कहानियों में शिक्षित ग्रामीण युवक जो पढ़ लिखकर भी बेरोजगार हैं और उसका चित्रण बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है। 'कसूर' बेरोजगार ग्रामीण नवयुवक की कहानी है जो इंटरव्यू दे देकर थक जाता है, लेकिन नौकरी नहीं मिलती। उसकी गैरहाजिरी में पुलिस उसके घर आती है उसे पकड़ने । गाँव के लोग उसे डकैती से जुड़ा हुआ मानते हैं। इसी तरह गरीब डोम नटवर को भी हर चोरी में पुलिस ने पकड़ ले जाती थी उसके पूछने पर नटवर ने उत्तर दिया था– "बबुआ जी मैं गरीब होते हुए भी शरीर से तगड़ा हूँ न इससे बड़ा कसूर और क्या हो सकता है दुनिया में?" रमेन्द्र के माता पिता और पत्नी भी उसे कसूरवार मान लेते हैं। उसे नटवर के शब्द याद आते हैं, जो उसके लिए भी सार्थक है। शिक्षित

ग्रामीण युवक की बेकारी जन्य कथा को वाणी देने वाली यह कहानी भी महत्वपूर्ण है। इस प्रकार शिक्षित ग्रामीण युवकों की बेकारी को अपनी कहानियों में मिथिलेश्वर ने बहुत ही सशक्त रूप से चित्रित किया है मिथिलेश्वर ने पहली' हँसी' कहानी में गरीबी का चित्रण किया है। पहली हँसी कहानी का नायक भी बीञ ए ञ्ऑनर्स होकर भी बेकार है। कहानियाँ लिखने से उसका पेट नहीं भरता। इस कहानी का नायक कहानियाँ लिखता है और उससे जो पैसे मिलते हैं उससे उसका घर मिलता है।उसके घर में तेल नहीं है ,तरकारी नहीं है ईंधन नहीं है। कहानी का नायक नौकरियों के चक्कर में इधर—उधर दौड़ता है। उसने अर्थात् कहानी के नायक ने बी ञए ञ्कर चुकने के बाद जो रंगीन सपनों के महल खड़ा कर देता था'' बीञए ञ कर चुकने के बाद पीसीएस कंप्लीट करेगा फिर जल्दी ही किसी शहर में गजटेड पोस्ट पर उसकी नियुक्ति होगी। वहाँ उसका अपना बंगला होगा उस बंगले की उसकी पत्नी रानी होगी। सैर सपाटे को गाड़ी ले लेगा। एक सर्वेंट रख लेगा। इसी तरह ढेर सारी काल्पनिक बातों के सहारे वह ख्वाबों का रंगीन महल खड़ा कर देता था।'' १उसके घर का गुजारा कहानी लिखकर जो रूपया मिलता है उससे चलता है। कहानी का निवेदक कहता है, उसी समय सारिका में एक कहानी प्रकाशित हुई थीऔर सौ रुपये मिले थे ।डॉक्टर दास को पाँच रुपए फीस देकर उसने रीना को दिखाया था।साव जी के एक महीने का बिल चुकाया था और शेष रुपये से महीने भर का नमक, तेल, मसाला और सब्जी खरीदने में लगा दिया था।''२

कहानी के अन्त में वो सोचता है ,कहानी प्रतियोगिता हेतु कहानी भेजने के बदले वह स्वयं भी वहाँ जाकर पेश क्यों न हो जाए इस बात पर वह दिन भर में पहली बार हँसता है।

मिथिलेश्वर की कहानी 'तीन यार 'में अभाव और सुविधाओं को लेकर लिखी गई कहानी है। लेखक घर से कॉलेज जाते समय प्रतिदिन अपनी गली के नुक्कड़ पर तीन यारों को ताश खेलते देखा करते थे ।नाम, रूप, रंग और कद काठी को लेकर वे तीनों एक—दूसरे से पृथक थे तथा तीनों तीन जातियों से आते थे। वे तीनों गुण्डे, बदमाश हैं। स्थानीय लोग उन युवक को से उलझना नहीं चाहते थे। उनसे उलझ कर लोग अपने इंज्जत गंवाना नहीं चाहते थे। उनके जोड़ को तोड कई बार मिला था ।वहां दो तीन बार वे पीटे गये हैं। एक दो बार हवालात की हवा भी उन्होंने खाई थी। लेकिन उनमें कोई परिवर्तन नहीं आया था। वे एक दिन मूंगफली वाले को मारते है ।पान —सिगरेट उधार लेते हैं। ये तीनों अर्थात् —बंशीधर अवधेश और चन्द्रदीप है। तीनों ही मध्यवर्गीय परिवार की पैदाइश हैं। इन तीनों को लेकर लेखक हमेशा सोचता है,और कहते हैं कि—'' इनका सबसे बड़ा कसूर यह है कि, वे बेरोजगार हैं। लंबी बेरोजगारी ने इन्हें इस मोड़ पर ला खड़ा कर दिया है''।३ तीनों शिक्षित हैं एम.ए. पास है पर इनकी योग्यता मैट्रिक की नहीं है।यदि ईमानदारी से मैट्रिककी परीक्षा ली जाए तो तीनों अनुत्तीर्ण घोषित किए जाएंगे। असल में यह उन वर्षों की देन है। जब राजनीति में छात्रों का सक्रिय सहयोग लिया गया था। उस बहती गंगा में तीनों ने एम.ए. की डिग्री पायी थी।

शिक्षा संस्थाओं के द्वारा शिक्षित एवं अविवाहित युवतियों का यौन शोषण मिथिलेश्वर का नयाकहानी संग्रह' जमुनी सुबह की प्रतीक्षा 'कहानी में शिक्षा संस्थाओं के द्वारा शिक्षित एवं अविवाहित युवतियों के यौन शोषण का चित्रण किया गया है। इस कहानी की प्रमुख पात्र है रुचिका। जो एम.एस.सी. जूआलॉजी में हुई है। उसका परिवार गरीब है ।उसकी शादी नहीं हो पा रही है। अधिकांश लड़के कमाऊ बीवी चाहते हैं। नौकरी मिलते ही लड़कियों की शादी हो जाती है। भरोसे की नौकरी आज के युग में मिलना सबसे मुश्किल काम हो गया है रुचिका के माता पिता उसे डॉन चिल्ड्रन अकैडमी नामक शिक्षा संस्था में शिक्षिका की नौकरी के लिए स्वीकृति दे देते हैं। वह घर बैठी है पढ़ी लिखी है अन ब्याही बेटी है पिता उसकी शादी करने के लिए चार पांच साल से दौड़ रहे हैं। कहीं मन लायक वर मिल भी जाता है तो दहेज की मांग बढ़ जाती है। कहीं घर परिवार ठीक है तो वर बेढंगा । मनमाफिक वर कहीं नहीं मिलता। विवाह में भी प्रतियोगिता की भीड़ है जो सबसे ऊंची बोली बोलता

है उसके हाथ में वर की लगाम होती है। ऐसी परिस्थितियों में लड़की का अपने पैरों पर खड़ी होना अति आवश्यक है।

रुचिका चिल्ड्रन अकैडमी नामक अंग्रेजी स्कूल में पहुंचती है। अंग्रेजों के जाने मात्र से कुछ नहीं हुआ है। उनकी अंग्रेजियत आज भी जीवित है। स्कूलों के नाम आज भी अंग्रेजी में रखे जाते हैं। वो नाथ साहब से मिलने जाती है रुचिका सहाय ने अनुभव किया कि दरवाजे के भीतर से नाथ साहब की आंखें उसे तौल रही है। वह प्राचार्य और शिक्षक के बीच दूरी रखने के पक्षधर नहीं है। पारिवारिक माहौल में विश्वास रखते हैं। रुचिका स्टाफ मे पहुँच कुछ देर बाद शिप्रा को खोजने लगी थी। बहादुर से वह शिप्रा के बारे में पूछने वाली ही थी कि चेंबर से शिप्रा की आवाज सुनाई पड़ी "छोड़िए सर! रुचिका खोज रही होगी।"४ उसके बाद पर्दा हटाकर रुचिका ने देखा कि "नाथ साहब के हाथों में शिप्रा का मुलायम हाथ देखकर वो कांप गई थी। उसे तो जैसे बिच्छू का डंक लग गया था। सिर से पांव तक झनझना उठी थी वह।"५ रुचिका सोचती है कि इन प्राइवेट स्कूलों में रोजगार के नाम पर यह सब होता है। इस कहानी में शिक्षण संस्थाओं के संचालकों द्वारा शिक्षित एवं अविवाहित युवतियों के यौन–शोषण का चित्रण है। रुचिका इस घृणित व्यवस्था के प्रति विद्रोह होकर अपनी निजी संस्था खोलने का सपना देखती है।

कहानीकार मिथिलेश्वर ने 'अन्तहीन' कहानी में गरीबी और बेकारी, धन बल और जन बल का चित्रण किया है। इस कहानी का नायक शुकर गाँव का निवासी है पर वह गाँव से भाग गया था वह गाँव के दक्षिण की तरफ पहाड़ी पर अपने जैसे लोगों के साथ रहता था और फिर पहाड़ी के पार जंगल को उसने अपना अड्डा बना लिया था। गंगा के किनारे की घनी झाड़ियों में वो छिपा होता था। शूकर ऐसे कैसे बना? इसे लेकर लेकर गाँवों के लोगों की राय भिन्न–भिन्न रही है। शायद दुनिया का कोई भी ऐसा व्यक्ति न हो, जिसको लेकर लोगों की धारणा एक हो। किसी के बनने बिगड़ने के कारणों पर आम सहमति हो ही नहीं सकती कुछ लोगों को मानना था कि, "वह तो शुरू से ही बदजात था। जिसका खून ही सही नहीं,वह और क्या करता?"६ लोग कहते हैं कि सू शुकर के पिता का विवादित ब्याह था। युवावस्था की ढलान पर भी जब उनकी शादी के लिए बिरादरी के लड़की वाले नहीं आए तो गंगा उस पार के एक गाँव की गरीब लड़की खरीद कर उन्होंने ब्याह कर लिया था। गाँव के लोगों के अनुसार वो नीची जाति की अछूत कन्या थी। उस लड़की से शुकर का जन्म हुआ था। गाँव के जातिवादियों की नजर में वह दोगला (वर्ण संकर) था। उसके बारे में उनकी धारणा के लिये कठोर थी लेकिन कुछ लोगों का कहना था कि, "बुरी मुहब्बत उसे ले डूबी। गाँव–जवार के छटुओं ने बचपन में ही उसे गांजा बीड़ी पीना और दूसरों के बगीचे से फल तोड़कर खाना सिखा दिया था। उन्हीं छँटुओं की संगत में वह किसी के खेत से बूँट और मटर के पौधे उखाड़कर होरा लगा लेता था। बचपन की उसी आदत ने जवानी में उसे हैवानियत तक पहुँचा दिया.....।"७ इससे अलग लोगों का यह विचार है कि "गरीबी और बेकारी ने उससे यह मार्ग पकड़वाया। बचपन में वह चंचल जरूर था, पर पढ़ने लिखने में अच्छा था। गांव की पाठशाला में सातवीं कक्षा तक बराबर प्रथम आता था। उसके बाप ने आगे नहीं पढ़ाया नहीं तो वह जरूर कोई हाकिम बनता.....।"८ उसके पिता ने जीवन में ही खेत–जमीन सब बेच दिया था। शुकर को बनाने –संवारने के लिए उनके पास कोई साधन नहीं था। कंगाली में उसका बाप अपनी पत्नी को लेकर कहीं चला गया था। शूकर को जीने का कोई सहारा नहीं था। मजदूरी जैसा ओछा काम उसे पसंद नहीं था। उसके पूर्वज गाँव के नामी–गामी काश्तकार थे। उसके जैसे युवक के लिए हलवाही, चरवाही और मजदूरी का काम तौहीनी काम था। बचपन के छँटुओं और सोहदों के साथ लूटपाट का काम शुरू कर दिया था।

इस प्रकार निष्कर्ष स्वरूप में यह कहा जा सकता है कि, मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण आर्थिक जीवन की सशक्त रूप में अभिव्यक्त हुई है। मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण आर्थिक जीवन के अभिव्यक्ति से यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रामीण लोग

आर्थिक अभावों में जीवन यापन कर रहे हैं। आर्थिक अभाव ही लोगों की सबसे बड़ी समस्या रही है और उसके साथ जूझते आए हैं।

आजादी के पहले विदेशी शासनकाल में ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं हुआ था। आजादी के बाद भी खास कोई आर्थिक सुधार नहीं हुआ। आज भी लोग दैनिक जीवन की आवश्यक जरूरतों की पूर्ति करने में असमर्थ है। मिथिलेश्वर ने अपनी कहानी साहित्य के द्वारा ग्रामों की आर्थिक स्थिति का यथार्थ रूप में चित्रण किया है।

मिथिलेश्वर ने अपनी कहानियों में गांवों की आर्थिक स्थिति को भी संवेदनात्मक आर्थिक स्थिति भी संवेदनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया है। यहां उच्च वर्ग के रूप में जमींदार महाजन सरकारी अफसर एवं नेता लोग हैं जो समाज की जोक हैं। गाँव का निम्न वर्ग आर्थिक विपन्नता के कीचड़ में सड़ता हुआ जमींदार, महाजन, दरोगा व ऐसे ही लोगों के शोषण का शिकार है। दरिद्रता, भूख, बेकारी, बेरोजगार युवक आदि कई समस्याएं ग्रामीण निम्न वर्ग को तंग कर रही हैं। कहानी कार मिथलेश्वर ने अपनी आर्थिक समाजवादी दृष्टि का परिचय देते हुए इस वैषम्य के विरुद्ध सर्वहारा वर्ग में क्रांति का आह्वान किया है।

सन्दर्भ सूची–

१— बन्द रास्तों के बीच—पहली हँसी, पृष्ठ संख्या—१५१
२— वही, पृष्ठ संख्या—१५२
३— भोर होने से पहले—तीन यार, पृष्ठ संख्या—१४४
४— जमुनी सुबह की प्रतीक्षा—पृष्ठ संख्या —१०९
५— वही, पृष्ठ संख्या—१०९
६— चल खुसरो घर अपने—अंतहीन, पृष्ठ संख्या—२८
७— वही, पृष्ठ संख्या २९
८— वही, पृष्ठ संख्या २९

❑❑❑